RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-12
December-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

कविता और गुलाब

विम्मी रानी

शोध छात्रा

'कविता' कवि गुलाब जी का प्रथम काव्य संग्रह है जो १६४१ ई. में प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशन के समय कवि की अवस्था मात्र ६७ वर्ष की थी। इसमें गुलाब जी के आरंभिक जीवन में उठनेवाले भावोद्गारों का मुक्तकों में संग्रह है। प्रारंभिक रचना होने पर भी कविता में प्रौढ़त्व के अतिरिक्त सौंदर्य, संवेदना, श्रृंगार, कल्पना और सूक्ष्म अनुभूतियां भरी हुई हैं। जिस प्रकार निराला के जीवन में उनकी प्रथम रचना 'परिमल' का तथा पंत के कृतित्व में उनकी प्रथम रचना पल्लव का महत्त्व है, उसी प्रकार गुलाब जी के कृतित्व में उनकी प्रथम रचना कविता का विशेष महत्व है। इस संग्रह की पहली कविता वाणी का वर दो में कवि मां शारदे की वंदना करते हुए उनसे वाणी का वरदान मांगते हुए कहते हैं–

'मेरा कवि वह गीत सुनाये
सुन जिसको कोयल सकुचाये
चारों ओर धूम मच जाये
कवि प्रतिभा रच। वरद। विश्व नव छवि विमुग्धुकर दो
मिले सृष्टि को सहज सुधरता
स्वर में बंध जाये सुंदरता
मैं युग की अगवानी करता
मुझको जीवन की वाणी दो, जीवन के स्वर दो।' १

यह जीवन क्षणभंगुर है। अतः कवि इस क्षणभंगुर जीवन को चिंता, अवसाद में डुबाना नहीं चाहते वरन हर पल आनंद व मस्ती के साथ गुजारने की कामना करते हुए वे कहते हैं–

वह बोल रही बुलबुल तरु पर
गिनती के क्षण हैं जीवन के
हो पूर्ण सकेंगे फिर कैसे
अरमान हजारों यौवन के।
यह ज्ञान उठा ले जा ज्ञानी।
अवकाश नहीं मुझको, सीखूं
विस्मृति की मादक वेला में
हम पात्र नहीं हैं बंधन के
गा जिन्हें मस्त जीवन हो ले
मुझको वे गीत सिखा दो ना।

बस एक बार मुस्का दो ना॥२

कहीं कर्म बोध को लक्षित कर कवि कहते हैं–
किसी महान सुख की कर आशा
बैठा है चुपचाप ठगा–सा
सम्मुख मधु का सिंधु उमड़ता, तू प्यासा का प्यासा
तेरी यह अनंत अभिलाषा।३

कुछ कविताओं में कवि आशांवित और उत्साही दिखायी देते हैं तो कुछ कविताओं में भाग्यवादी और निराशा दिखायी देते हैं। वे लिखते हैं–

बतला दूं मैंने जीवन में क्या देखा
असफलता है अभिलाषाओं का लेखा
हम मिटे, मिटे जग, जीवन भी मिट जाये
पर अमिट रहेगी यहां भाग्य की रेखा।४

कही वर्षा ऋतु के अप्रितम सौंदर्य पर मुग्ध होकर कवि लिखते हैं–

विधान को बना विमल उद्यान
जगाती जगती का उल्लास
पहन हरियाली का परिधान
आ गयी वर्षा ऋतु सविलास
तरंगों पर नदियों की नाच
धनावलियों पर हो आसीन
चपल चपला की लेकर चला
चली करने को विश्व नवीन
आज वन वन में हो मधुमास
आज कण कण में हो उल्लास
प्रकृति के हरित अधर पर आज
खिले शत–शत सुमनों का हास
आज कवि के भावों के साथ
व्योम से उतरे स्वप्न–कुमार
उमड़ता आया जीवन स्रोत
कल्पने। कर नूतन श्रंगार।।५

कहीं कवि अपने हृदय में, छिपे रागात्मक भावों की अभिव्यक्ति करते हुए कहते हैं–

ले यौवन का अभिशाप जला करता हूं
अपनी ज्वाला में आप जला करता हूं
युग हुए किया था प्यार कभी जीवन में

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

अब तिल तिल कर चुपचाप जला करता हूं।६

कभी–कभी कवि को अपनी प्रिया के संग बिताये मधुर क्षणों की स्मृति बेसुध कर देती है। उसी बेसुधी में गाते हुए कवि कहते हैं–

आज वायु के झोंके सी प्रिय। आयी याद तुम्हारी
सिहर उठे ये प्राण, तिमिर में आया जाने कौन
और चू पड़े दो उजले मोती गालों पर मौन
हाहाकार कर उठा, अनुभव कर अपनी लाचारी
एक साथ आ गये याद बीते सुख–दुःख हजार
मानों कोई भींड मर गया तारों में झंकार
नाच गयी आंखों में कुछ तस्वीरें प्यारी–प्यारी
वे न रहे, रह गयी याद ही केवल उनकी साथ
हृदय हमारा, हाय। पड़ गया–हदयहीन के हाथ
वे तो गये, आज मेरे भी जाने की है बारी
आज वायु के झोंके–सी प्रिय। आयी याद तुम्हारी।७

कवि अपने हृदयगत दुःख को अभिव्यक्त करना नहीं चाहते। वे कहते हैं जैसे प्रेयसी से मिलन मूक था, वैसे ही विदाई भी मूक हो। वे अपने हृदय में इस तरह रोए कि उनका रोना, उनका दुःख उनकी पीड़ा कोई जान न पायें। वे लिखते हैं–

आज मधु ऋतु क्यों विजन में ओस के आंसू बताये।
आज कोयल कुंज में क्यों प्रिय विरह के गीत गाये।
ज्यों मिलन चिर मूक था, त्यों ही विदा भी मूक होगी।
इस तरह रोऊं, न तुम देखो न जग ही जान पाये।८

भले ही यह कवि का प्रथम काव्य संग्रह है लेकिन काव्य शिल्प उत्कृष्टता की सीढ़ीयों पर चढ़ता हुआ लगता है। अपने समय के यशस्वी कवि सूर्य कांत त्रिपाठी निराला ने इस काव्य संग्रह की भूमिका में लिखा–कविता के प्रूफ मैंने देखे। कवि गुलाब की रचनाएं पहले भी सुन चुका हूं। उन्हीं की जुबानी उनकी तारीफ भी कर चुका हूं। आज छपे आकार में देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता है। बहुत सी रचनाएं जो कविता की कोटि में आसानी से गुलाब की तरह अपने दल खोल चुकी हैं, खुशबू, से उन्मद स्निग्ध कर देती हैं।६

श्री कृष्णदेव प्रसाद गौढ़ (बेढब बनारसी) जी ने अपना आशीवर्चन देते हुए लिखा है– गुलाब कविता कानन के नवविकसित कुसुम हैं। अठारह वर्ष की अल्यावस्था में, रचनाओं में ऐसी अनुभूति का परिचय आपकी अद्भुत प्रतिभा का परिचायक है। भाव और भाषा का इतना सुंदर सामंजस्य कदाचित ही हिंदी के किसी कवि ने इस अवस्था में किया हो।१०

संदर्भ सूची

१. गुलाब ग्रंथावली प्रथम खण्ड भाग–१, पृ. ४१
२. वही, पृ. ४८
३. वही, पृ. ४२
3. वही, पृ. ५०
५. वही, पृ. ६३–६४
६. वही, पृ. ५४
७. वही, पृ. ६२
८. वही, पृ. ५६
६. वही, पृ. ३६
१०. वही, पृ. ३८